

## पूख की रात' कहानी की समीक्षा

'पूख की रात' शीर्षक कहानी कथा शायर प्रेमचंद की रचना है। इसमें रूंगीवासी व्यवस्था की भार झेलते हुए एक भारतीय किसान के दयनीय एवं त्रासदीपूर्ण जीवन-चरित्र को दिखाया है। वैसे तो प्रेमचंद अपने आरंभिक कथा यत्ना में आदर्श-मुख यथार्थवाद को लेकर चलते हैं परन्तु अपनी कथा यत्ना के अंतिम दौर में शोषण और अत्याचार पर साधारण व्यवस्था का अभाव यथार्थ प्रस्तुत करते हैं। महाजनो रूंगीवासी का आक्रामक एवं क्रूर हिंसक रूप दिखाना इस कहानी का केन्द्रीय भाग है। इस तरह हड़दी तोड़कर खेतों में काम करने वाला किसान अरिफे खन्न खाने के लिए तरस जाता है यही इस कहानी की कथावस्तु है।

'पूख की रात' कहानी में मुख्य तीन पात्र हैं हल्कू, उसकी पत्नी मुन्नी और गबरू कुता। एक और अप्रत्यक्ष पात्र है सहनाड़ी कहानी की त्रासदी का गौंवर खता है। वह महाजन का आदमी है जो रूपमा वसूल करने के लिए हल्कू के घर जाता है। कमल के लिए स्मृति दिये हुए लीन रूपमें हल्कू महाजन के आदमी को दे देता है। पूख की हंडी रात का सुपना वह बिना उम्हल का करता है। कहानी के कुल चार भाग हैं। कहानी के दूसरे और तीसरे भाग में ही हल्कू को पूख की रात का खाना करते हुए दिखाया गया है शायद इसका पालन कुता गबरू है। इस वकत गबरू को वो ऐसे पेट भरता है जैसे इसका अपना बेटा हो। गाँव में छिपते हुए वह कहता है - "और एक भगवान ऐसे पैड़े हैं जिन्हें पाक गाड़ा जाये तो गरमी ले चकड़ा कर भागे। मोरे-मोरे गाँव छिछा मजाल है गाँव का गुजर हो जाए। तब दौर की खूबी है। मजरी हमारे मजा दूधरे लूटे।"

इस कहानी की मुख्य विशेषता है हल्कू का स्वर्णिमानी

होना। वह हँड से काँपता कर दाँवों पर नज़र है लेकिन महाजन की गाड़ी नहीं। वह दीवला की मार से दबा नहीं जितना की अपनी ठालान जितने उसे आज इस राह पर लाकर खड़ा कर दिया। वह भाग्यवादी और अंधविश्वासी की है। उसके जीवन का शुरू-रुख मजबूरी की कहानी कह रहे थे। उसी पत्नी पुन्नी सब कुछ लभारतीय नारी का प्रतीक है जो उसके सुख-दुख में राख देती है। रात में हँड के कारण इधर से उधर हरवरे बदलना बदलने से उसे कुतरे को गोद में लेकर लेना रात में पत्नियाँ बटोरकर फलाक जलाना और अंत में अलाव की बुझी गर्मी राख में खो जाना यही कथा नयिक की बियाह है। वह अपने को इस स्थिति में बिलीयरुह स्था योजित करता है। मन में इसका मलाल जरूर रहता है कि वह इस स्थिति में क्यों है।

इस कहानी में इस की रात सब दृश्य वनछर पानों के बीच जाते हैं। इस रात से वनने की दृष्टि पराएर उनके अंदर देखी जा सकती है। मजबूरी से सड़-सड़ बैसा कारकर कमल लिये रहना और इसे फिर महाजन छोड़ देना इनका कलेजा विकलने के गैरा है। कहानी की कथा वस्तु पान और धरना सब हो गये है ऐसा लग रहा है कि जैसे भाग्य के रूप में भारतीय किसान की विवर्णता आजा बोल रही है। मजबूरी के लिए इस की रात के धरना का दृश्य हृदय को दबित कर देता है। कहानी का अंत भी प्रेमचंद ने बड़े ही हास्यपूर्ण ढंग से किया है। कल नष्ट हो जाने के बाद भी हलक खुश है उसे मजबूरी पुन्नी का चेहरा उदास है लेकिन हँड में बिलीयरुह नहीं। में भाग्यवादी दृष्टिकोण का संचार करती है।

## Notes

Date .....

पूदरी रात कहानी की भाषा झैली विस्तृत ही शारीण क्षेत्र की है जिसमें लोक भाषा की कटा के साथ होट्य जेग्य लिए देहली पन की खुशक महक उगे हैं। कही-कही पर भाषा का इतना न विवक्षण प्रयोग हुआ है कि देखते ही बनता है जैसे - किच्छू के डंकसा हवा का झोंका, सरी हुई हड़दी है मैरदी जैली महक जादि। कहानी में सब जया मोड़ पर पाठकों को लाकर छोड़ दिया गया है जहाँ कथा की शिल्प रचना, नये प्रयोग खंदर्भ, काल्पीय विश्लेषण तथ्यनिष्ठ, मूल्योक्ते और सधन कलात्मक संरचना के साक्षात्कार की मांग करती है।